4 महादेवी वर्मा

जीवन-परिचय—महादेवी वर्मा 'पीड़ा की गायिका' के रूप में सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री होने के साथ एक उत्कृष्ट गद्य-लेखिका भी थीं। गुलाबराय–जैसे शीर्षस्तरीय गद्यकार ने लिखा है–''मैं गद्य में महादेवी का लोहा मानता हूँ।'' महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद के एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में सन् 1907 ई० में हुआ था। इन्दौर में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज, इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की। इनका विवाह ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में ही हो गया था। श्वसुर जी के विरोध के कारण इनकी शिक्षा में व्यवधान आ गया, परन्तु उनके निधन के पश्चात् इन्होंने पुनः अध्ययन प्रारम्भ किया और प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में एम० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे 1965 ई० तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या के रूप में कार्यरत रहीं। इन्हें उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की सदस्या भी मनोनीत किया गया। इनका देहावसान 11 सितम्बर, 1987 ई० में प्रयाग में हुआ।

लेखिका-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-स्थान**—फर्रुखाबाद (उ०प्र०)।
- **जन्म एवं मृत्यु सन्**—1907 ई०, 1987 ई०।
- **पिता**—गोविन्द सहाय।
- **माता**—श्रीमती हेमरानी देवी।
- शुक्लोत्तर-युग की लेखिका।
- **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली।
- **शैली**—विवेचनात्मक, संस्मरणात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, आलंकारिक।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**—कविता के क्षेत्र में एक नवीन युग का सूत्रपात करने वाली कवयित्री के रूप में चर्चित।

साहित्यिक परिचय—महादेवी वर्मा के गद्य का आरम्भिक रूप इनकी काव्य-कृतियों की भूमिकाओं में देखने को मिलता है। ये मुख्यतः कवयित्री ही थीं, फिर भी गद्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कोटि के संस्मरण, रेखाचित्र, निबन्ध एवं आलोचनाएँ लिखीं। रहस्यवाद एवं प्रकृतिवाद पर आधारित इनका छायावादी साहित्य; हिन्दी साहित्य की अमूल्य विरासत के रूप में स्वीकार किया जाता है। विरह की गायिका के रूप में महादेवी जी को 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है। महादेवी जी के कुशल सम्पादन के परिणामस्वरूप ही 'चाँद' पत्रिका नारी-जगत् की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका बन सकी। इन्होंने साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु 'साहित्यकार-संसद्' नामक संस्था की स्थापना भी की। इन्हें 'नीरजा' काव्य-रचना पर 'सेकसरिया पुरस्कार' और 'यामा' कविता-संग्रह पर 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया। कुमाऊँ विश्वविद्यालय ने इन्हें 'डी० लिट्०' की मानद उपाधि से विभूषित किया। भारत सरकार से 'पद्म भूषण', 'पद्मविभूषण' भी इन्हें प्राप्त हुआ था। 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' इन्हें 1983 ई० में दिया गया था।

कृतियाँ—महादेवी वर्मा की प्रमुख कृतियाँ अग्रलिखित हैं–

निबन्ध-संग्रह—'क्षणदा', 'शृंखला की कड़ियाँ', 'अबला और सबला', 'साहित्यकार की आस्था', 'संकल्पिता' आदि। इन निबन्ध-संग्रहों में इनके साहित्यिक तथा विचारात्मक निबन्ध संगृहीत हैं। **रेखाचित्र**—'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ'।

संस्मरण–'पथ के साथी', 'मेरा परिवार', 'स्मृति चित्र', 'संस्मरण'। **भाषण संग्रह**–'संभाषण'। **सम्पादन–**'चाँद' पत्रिका और 'आधुनिक कवि' का विद्वत्ता के साथ सम्पादन कार्य किया। **आलोचना–**'हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य' तथा 'यामा' और 'दीपशिखा' की भूमिकाएँ। **काव्य-रचनाएँ–**'नीहार', 'नीरजा', 'रश्मि', 'सान्ध्यगीत', 'दीपशिखा', 'यामा', 'सप्तपर्णा', 'प्रथम आयाम' एवं 'अग्नि रेखा' आदि।

इन काव्य-कृतियों में महादेवी जी की अन्तर्वेदना और रहस्यमयी वृत्तियों की अभिव्यक्ति हुई है।

भाषा-शैली–महादेवी जी की काव्य-भाषा अत्यन्त उत्कृष्ट, समर्थ एवं सशक्त है। संस्कृतनिष्ठता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। इनकी रचनाओं में उर्दू और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी इनकी रचनाओं में हुआ है जिससे इनकी भाषा में लोक-जीवन की जीवन्तता का समावेश हो गया है। लक्षणा एवं व्यंजना की प्रधानता इनकी भाषा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस प्रकार महादेवी जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक भाषा है। इनकी रचनाओं में चित्रोपम वर्णनात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, भावात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, आलंकारिक शैली, सूक्ति शैली, उद्धरण शैली आदि द्रष्टव्य हैं।

गिल्लू रेखाचित्र 'मेरा परिवार' नामक पुस्तक से लिया गया है। इसमें इन्होंने एक कोमल लघुप्राण सुन्दर जीव (गिलहरी) की प्रकृति का मानवीय संवेदना तथा ममता के आधार पर चित्रण किया है। इस प्रस्तुति में आत्मीयता, ममता तथा स्नेहशील भावों का समन्वय है।

●●●

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कन्धे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राणी की खोज है।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौए एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुवा-छुवौवल-जैसा खेल खेल रहे हैं। यह कागभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु सन्देश इनके कर्कश स्वर ही में दे देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौआ और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की सन्धि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गयी। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो सम्भवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौए जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे। अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था।

सबने कहा कि कौए की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाय।

परन्तु मन नहीं माना, उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में ले आयी, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलीन का मरहम लगाया।

रूई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें-से मुँह में लगायी, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर लुढ़क गयीं।

कई घण्टे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले काँच की मोतियों-जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था, परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफाफे के भीतर बन्द रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घण्टों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहरवाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसन्त आया। नीम-चमेली की गन्ध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते और बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बन्द ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिनभर गिलहरियों के झुण्ड का नेता बना, हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गयी थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरे थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात हुआ कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से ये मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठण्डक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन-यात्रा का अन्त आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अन्त की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठण्डे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठण्डे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया, परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी गयी है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी–इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी– इसलिए भी कि लघुगात का, किसी वासन्ती दिन, जुही के पीलाभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे सन्तोष देता है।

● **महादेवी वर्मा**

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–

(क) सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कन्धे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राणी की खोज है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) गिल्लू को कहाँ समाधि दी गयी?

(ख) मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरे थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) गिल्लू को क्या बेहद पसन्द था?

(ग) मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से ये मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठण्डक में भी रहता।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) गिल्लू गर्मी से बचने के लिए किस पर लेट जाता था?

2. महादेवी वर्मा के जीवन-परिचय एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।

3. महादेवी वर्मा के जीवन एवं साहित्यिक परिचय को अपने शब्दों में लिखिए।

4. महादेवी वर्मा के साहित्यिक परिचय एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

5. महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. इस पाठ से लेखिका के स्वभाव आदि के बारे में आपको क्या-क्या ज्ञात होता है?
2. लेखिका ने अपनी रचनाओं में किन-किन शैलियों का प्रयोग किया है?
3. 'गिल्लू' कौन था? उसकी विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।
4. महादेवी वर्मा को 'विरह की गायिका' के रूप में 'आधुनिक मीरा' किस आधार पर कहा जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
5. लेखिका ने कौए को समादरित, अनादरित, अति सम्मानित तथा अति अवमानित क्यों कहा है?
6. गिल्लू को लेखिका ने किन परिस्थितियों में प्राप्त किया था?
7. गिल्लू के किन-किन व्यवहारों से पता चलता है कि वह समझदार प्राणी था?
8. 'गिल्लू' पाठ से दस सुन्दर वाक्य लिखिए।
9. लेखिका के किन व्यवहारों से ज्ञात होता है कि गिल्लू को वह अपने परिवार के एक सदस्य की तरह मानती थीं?
10. अपने किसी पालतू जन्तु के विषय में वर्णन कीजिए।

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा की दो रेखाचित्र कृतियों का नामोल्लेख कीजिए।
2. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) गिल्लू तीन वर्ष तक महादेवी जी के घर में रहा। ( )
   (ब) गिल्लू महादेवी जी के साथ उनकी थाली में भी खाता था। ( )
   (स) गिल्लू को कौए ने मार डाला था। ( )
   (द) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी। ( )
3. महादेवी वर्मा किस युग की लेखिका थीं?
4. गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष की होती है?
5. 'गिल्लू' नामक पाठ महादेवी जी की किस कृति से संकलित है?

● व्याकरण-बोध

1. **'समादरित'** शब्द का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए।
2. **वाक्य-विश्लेषण कीजिए–**
   यह कागभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।
3. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए–**
   गिल्लू, सोनजुही, वसन्त, जाली, काजू, गिलहरी।

● आन्तरिक मूल्यांकन

1. पाठ के आधार पर महादेवी वर्मा के साथ गिल्लू का एक पोस्टर तैयार कीजिए।
2. पशु-पक्षियों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? इस सम्बन्ध में अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।

●●●